मनमौजी हाथी

सिड, हिंदी : विदूषक

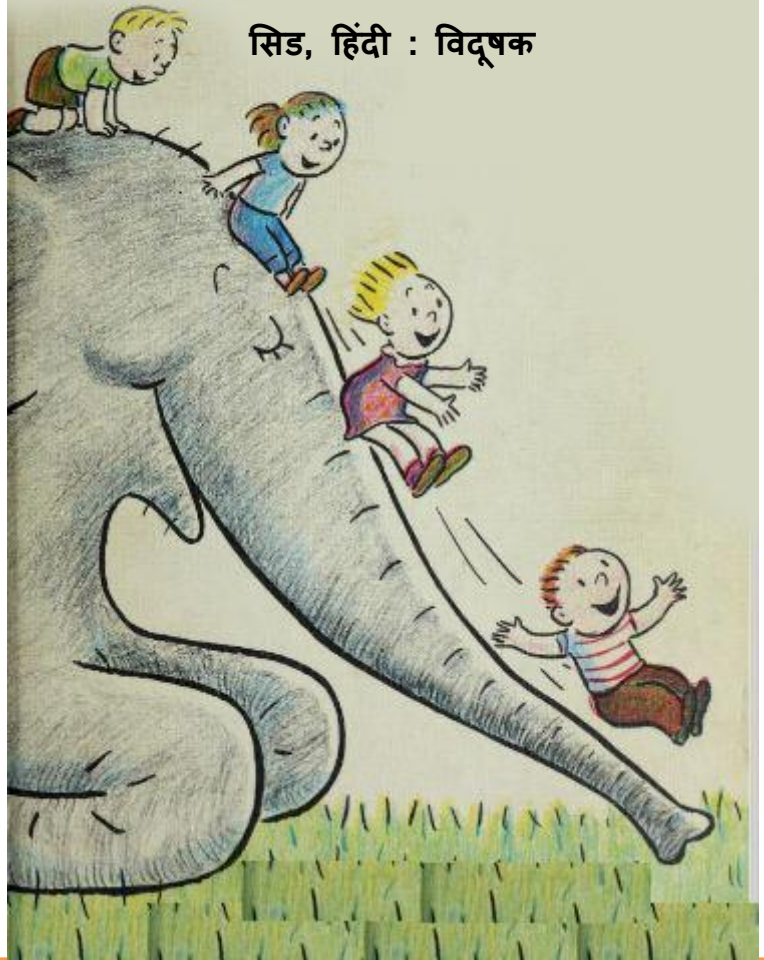

मनमौजी हाथी

सिड, हिंदी : विदूषक

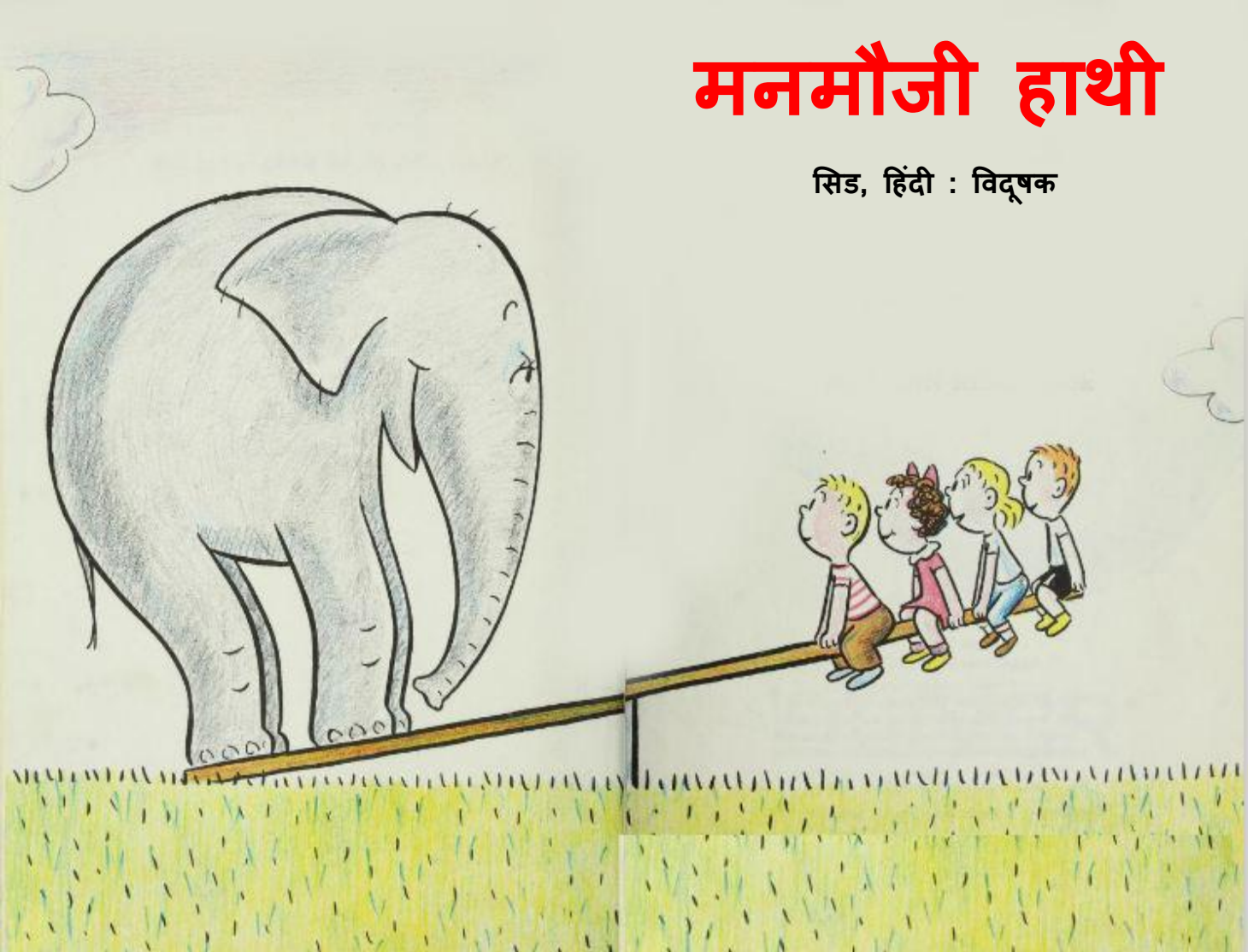

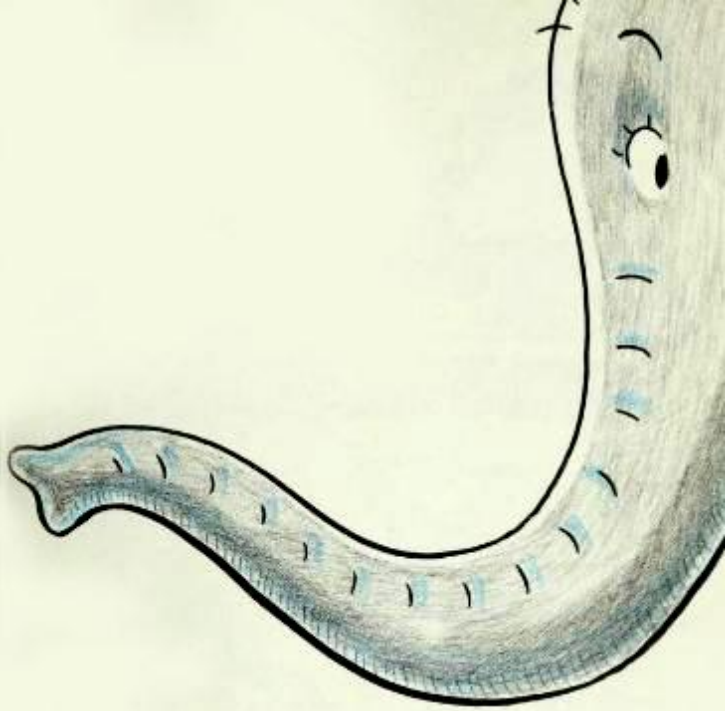

मनमौजी हाथी

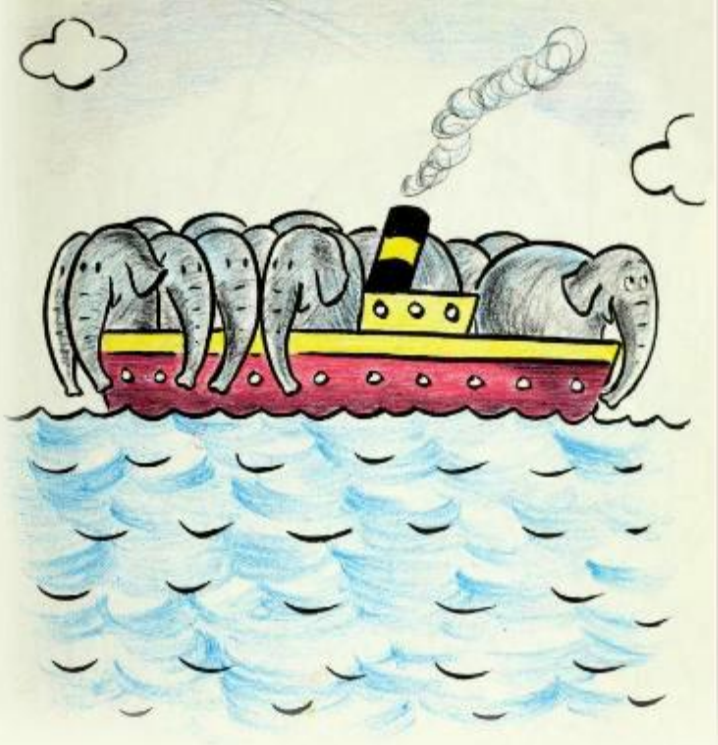

कुछ हाथी जहाज़ में समुद्र पार कर रहे थे.
वे एक सर्कस में काम करने वाले थे.
उनमें से एक का नाम था ओलिवर.

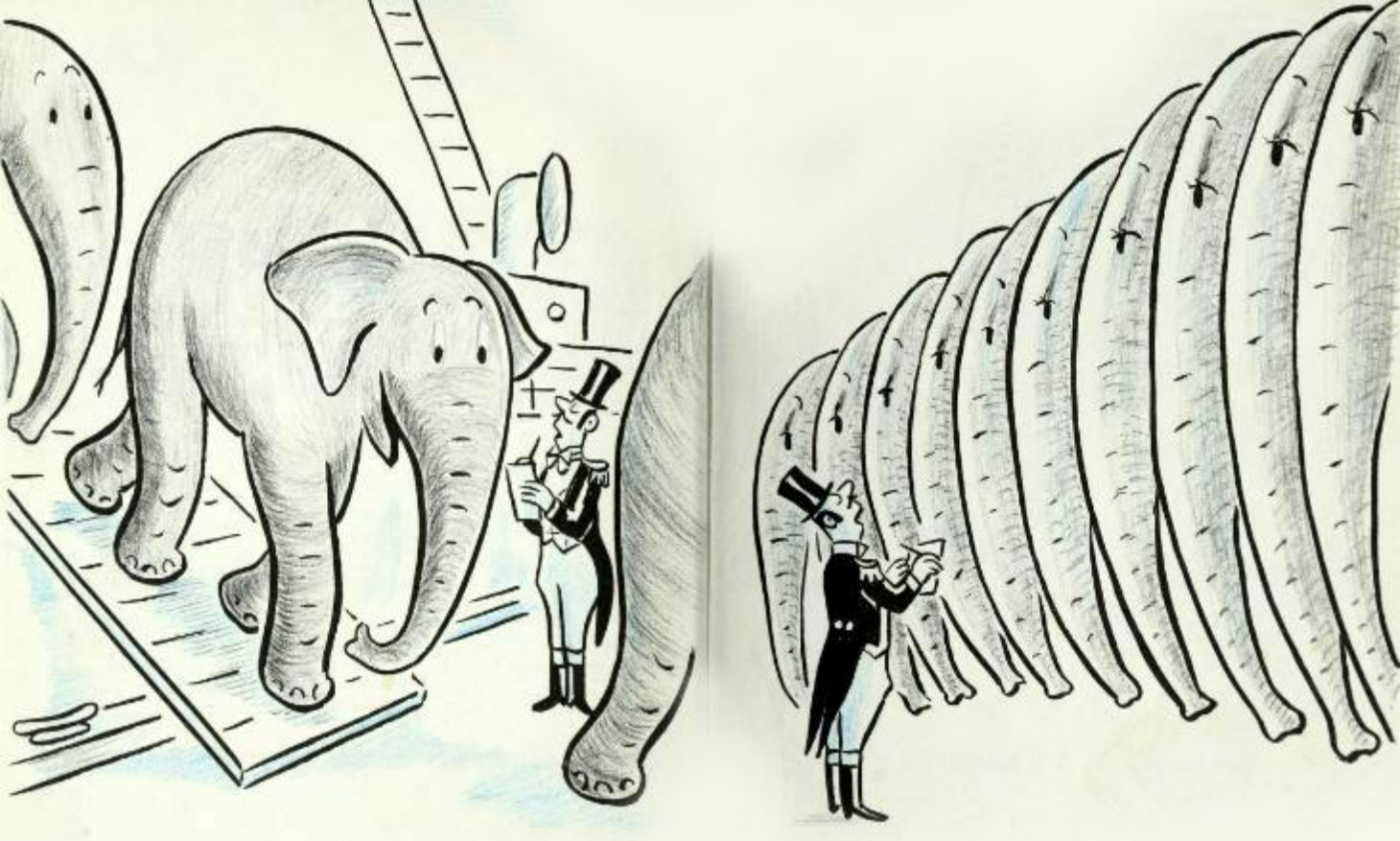

जब वो बंदरगाह पर उतरे
तो सर्कस के मालिक ने उनकी गिनती की.

“एक, दो, तीन, चार, पांच,
छह, सात, आठ, नौ, दस हाथी.”

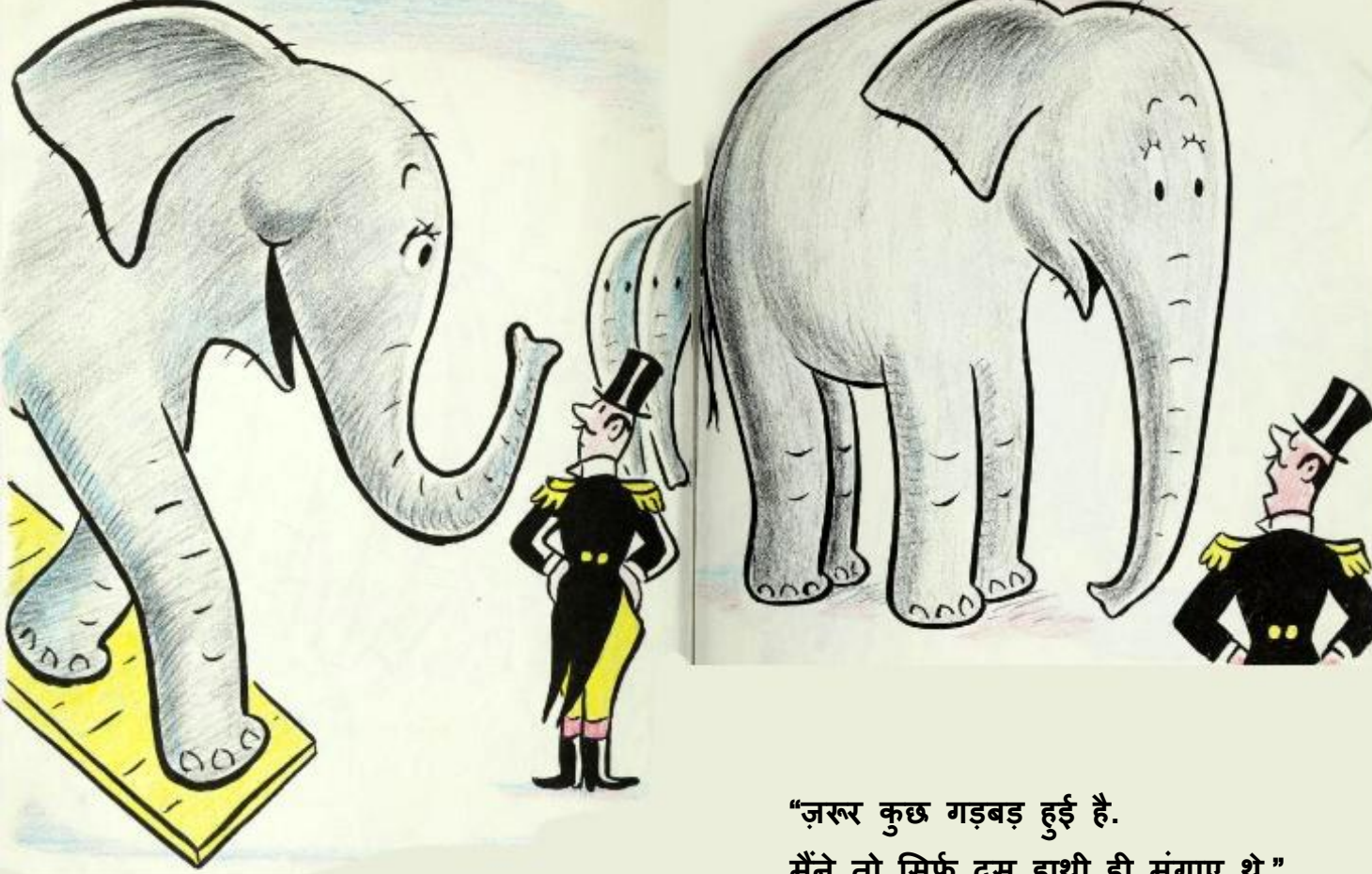

"उनमें एक और जुड़कर बने - ग्यारह,"
ओलिवर ने कहा.

"ज़रूर कुछ गड़बड़ हुई है.
मैंने तो सिर्फ दस हाथी ही मंगाए थे,"
सर्कस के मालिक ने कहा.
"हमें ग्यारह की ज़रुरत नहीं है."

“मैं ज़्यादा जगह नहीं घेरूंगा,”
ओलिवर ने कहा.
“हाथी हमेशा बहुत जगह घेरते हैं,”
सर्कस के मालिक ने कहा.

“अलविदा, ओलिवर,” दूसरे हाथियों ने कहा.
“अपना अच्छी तरह से ध्यान रखना.”

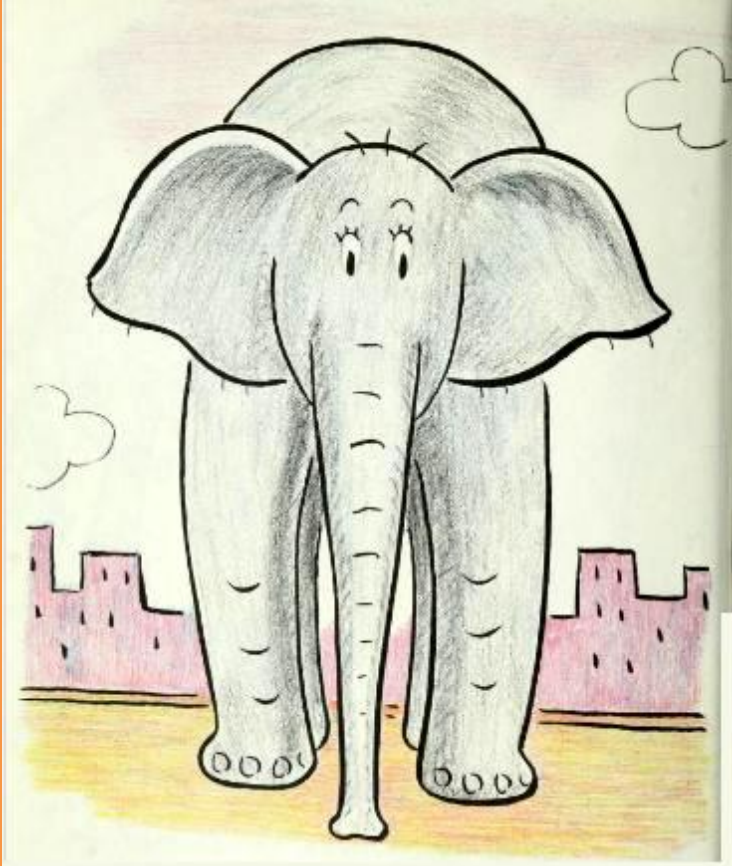

ओलिवर, बेचारा अब बिल्कुल अकेला था.
वो कहाँ जाए? उसे पता नहीं था.

तभी वहां एक छोटा चूहा आया.
“तुम चिड़ियाघर में क्यों नहीं जाते?”
चूहे ने कहा.
“शायद चिड़ियाघर में तुम्हें
कोई काम मिल जाए.”
“शुक्रिया, मैं अभी वहां जाऊँगा,”
ओलिवर ने कहा.

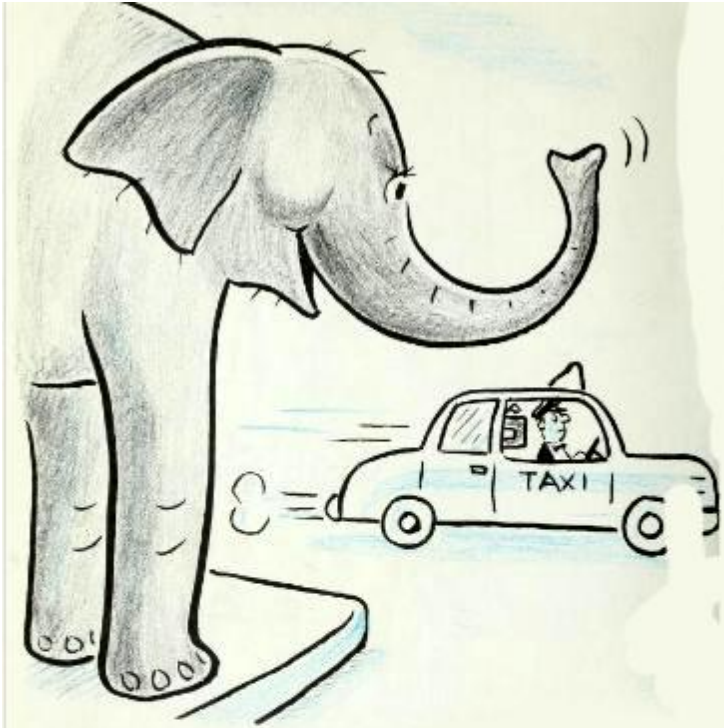

“टैक्सी!” ओलिवर ने एक टैक्सी को रोका.
“तुम्हें ले जाने के लिए बड़ा ट्रक लगेगा,”
टैक्सी वाले ने ओलिवर से कहा.
टैक्सी रुकी नहीं.

फिर ओलिवर ने मोटरकारों का पीछा.
ड्राईवर मुड़ते समय अपना हाथ बाहर
निकालते थे.

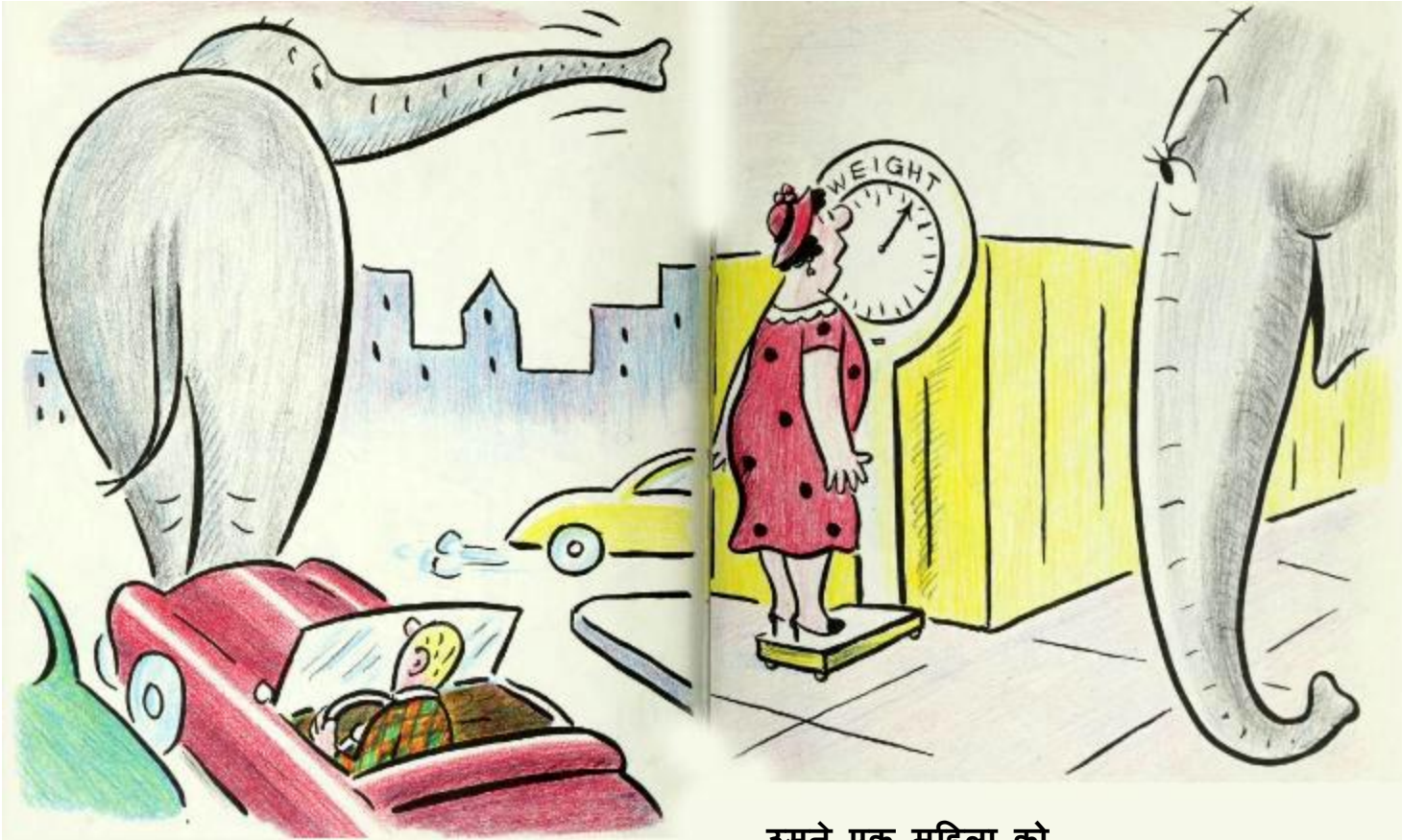

जब ओलिवर मुड़ा तो उसने भी अपनी
सूंड उस दिशा में की.

उसने एक महिला को
वज़न लेते हुए देखा.
“बाप रे!
मेरा भार एक हाथी जितना है,” उसने कहा.

View Page n3

फिर ओलिवर खुद वज़न लेने वाली मशीन पर खड़ा हुआ.

“मेरा वज़न भी एक हाथी जितना ही है!” उसने कहा.

अंत में ओलिवर चिड़ियाघर पहुंचा.

“यहाँ कौन इंचार्ज है?” ओलिवर ने पूछा.

“मैं हूँ,” एक आदमी ने कहा.

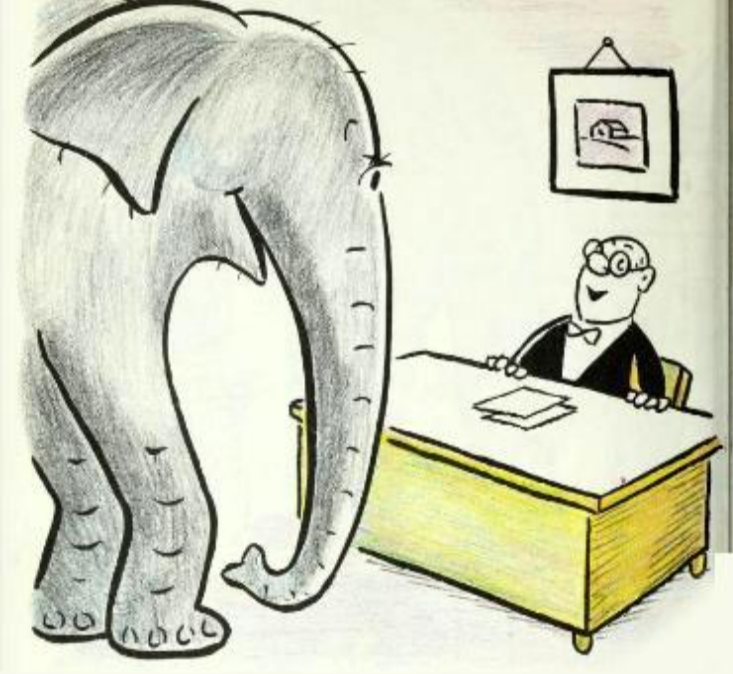

“क्या आपको एक हाथी की ज़रुरत है?”
ओलिवर ने पूछा.
“नहीं, अभी तो नहीं,”
चिड़ियाघर के इंचार्ज ने कहा.
“खैर, आपका शुक्रिया,” ओलिवर ने कहा.
फिर वो वहां से आगे बढ़ा.

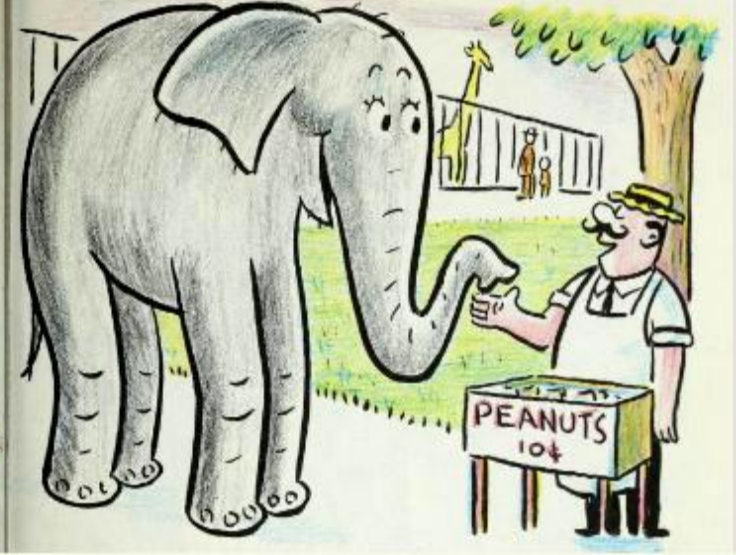

आगे एक आदमी मूंगफली बेंच रहा था.
“क्या मैं आपकी मूंगफली बेंचने में मदद करूं?”
ओलिवर ने पूछा.
“बताओ, तुम मूंगफली खाओगे या उन्हें बेंचोगे?”
उस आदमी ने पूछा.
“मैं उन्हें खाऊँगा,” ओलिवर ने कहा.
फिर उस आदमी ने सच बोलने के लिए ओलिवर को कुछ मूंगफलियाँ खाने को दीं.

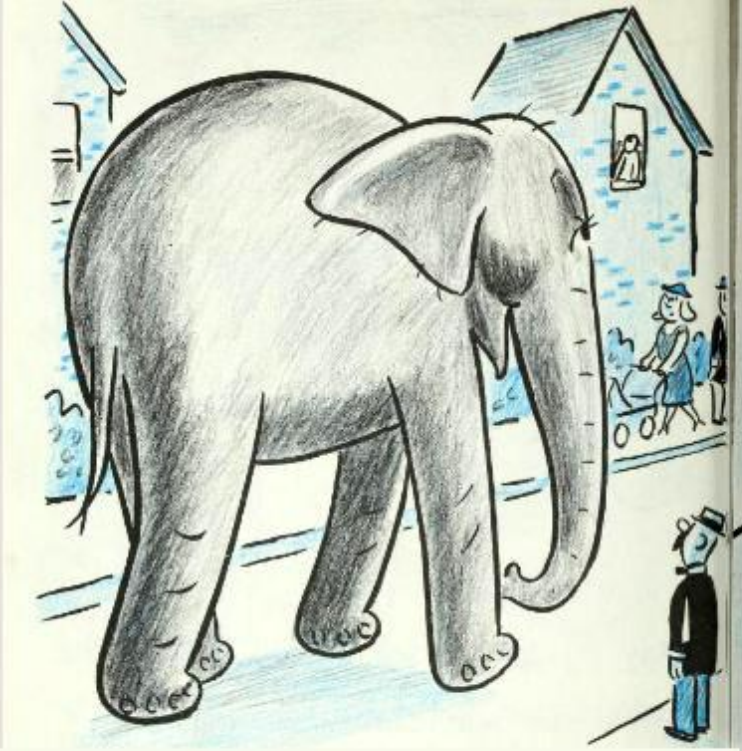

ओलिवर ने फिर चिड़ियाघर छोड़ दिया.
वो अब सड़क पर चलने लगा.
“क्या कोई मुझे अपने घर में पालतू
जानवर जैसे रखेगा?”
उसने पूछा.

“मेरे घर में पहले से ही एक तोता है,”
एक आदमी ने कहा.

“मेरे पास एक गोल्डफिश मछली है,” दूसरे ने कहा.

“मेरे घर में बिल्ली है,” तीसरे ने कहा.

"मेरे पास बत्तख है," किसी और ने कहा.

"अगर कुत्ता होता तो मैं ज़रूर रख लेती," एक महिला ने कहा.

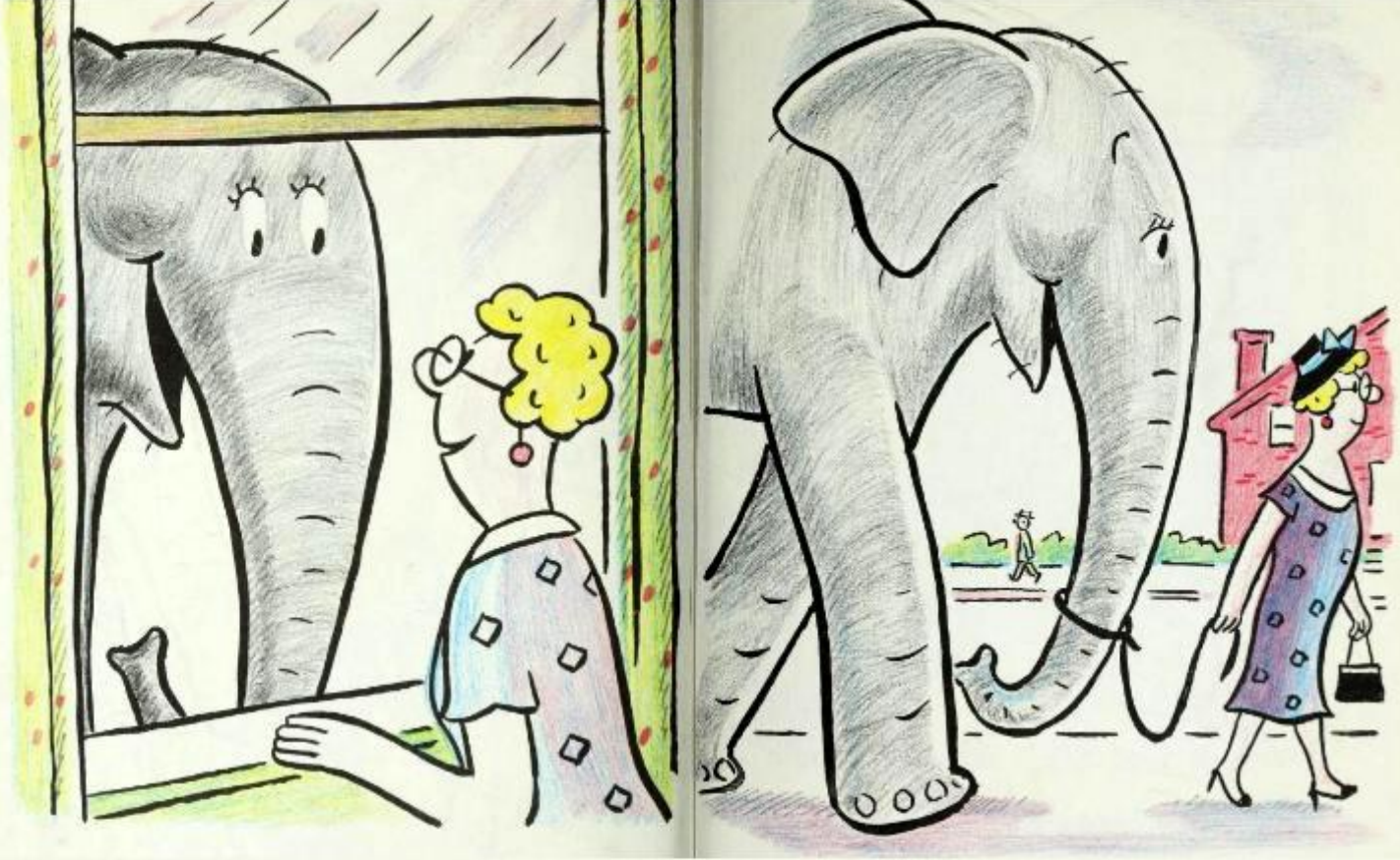

“मैं कुत्ता होने का नाटक कर सकता हूँ,”
ओलिवर ने कहा.
“ठीक है,” महिला ने कहा.

फिर ओलिवर और वो महिला बाहर घूमने गए.
“भों-भों!’ ओलिवर भूंका.

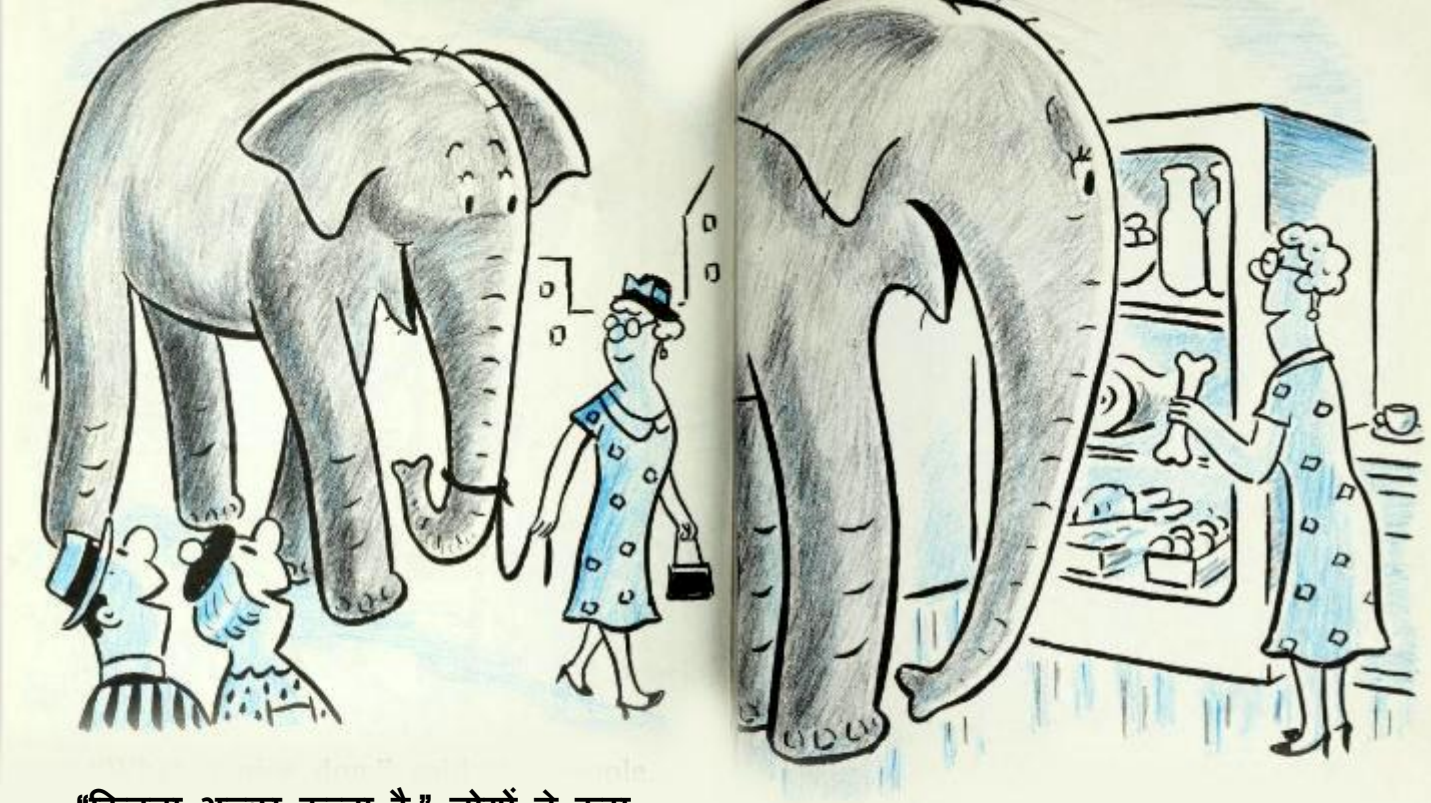

“कितना अच्छा कुत्ता है,” लोगों ने कहा.
“हमने ज़िन्दगी में इतना बड़ा कुत्ता पहले कभी नहीं देखा!”
“मुझे भूख लगी है,” ओलिवर ने कहा.
“चलो घर चलते हैं.”

“क्या आपके यहाँ घास है?” ओलिवर ने पूछा.
“नहीं, पर मेरे पास रसीली हड्डी है,”
महिला ने कहा.

“हाथी घास खाते हैं,” ओलिवर ने कहा.
“मुझे लगता है कि मैं आपका कुत्ता नहीं बनूँगा.
आपका बहुत शुक्रिया और अलविदा.”
“अलविदा,” उस महिला ने कहा.

उसके बाद ओलिवर आगे बढ़ा.
कुछ लोग घोड़ों पर सवारी कर रहे थे.
ओलिवर उन्हें देखता रहा.

“घोड़े घास खाते हैं. काश मैं भी एक घोड़ा होता,” उसने कहा.

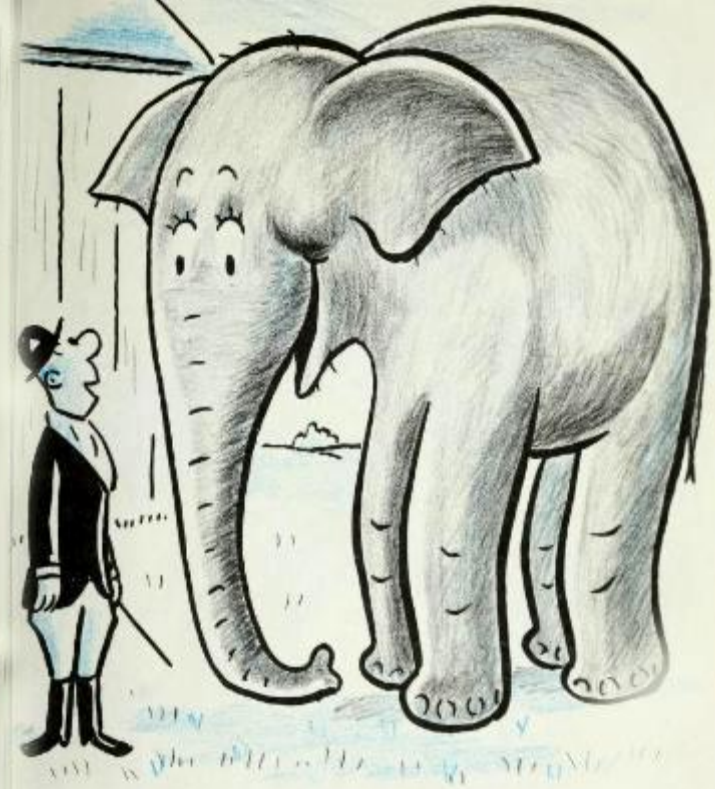

“क्या आपको एक घोड़े की ज़रुरत है?” ओलिवर ने पूछा.

“पर तुम तो हाथी लगते हो. पर मैं तुम्हारी सवारी ज़रूर करूंगा,” उस आदमी ने कहा.

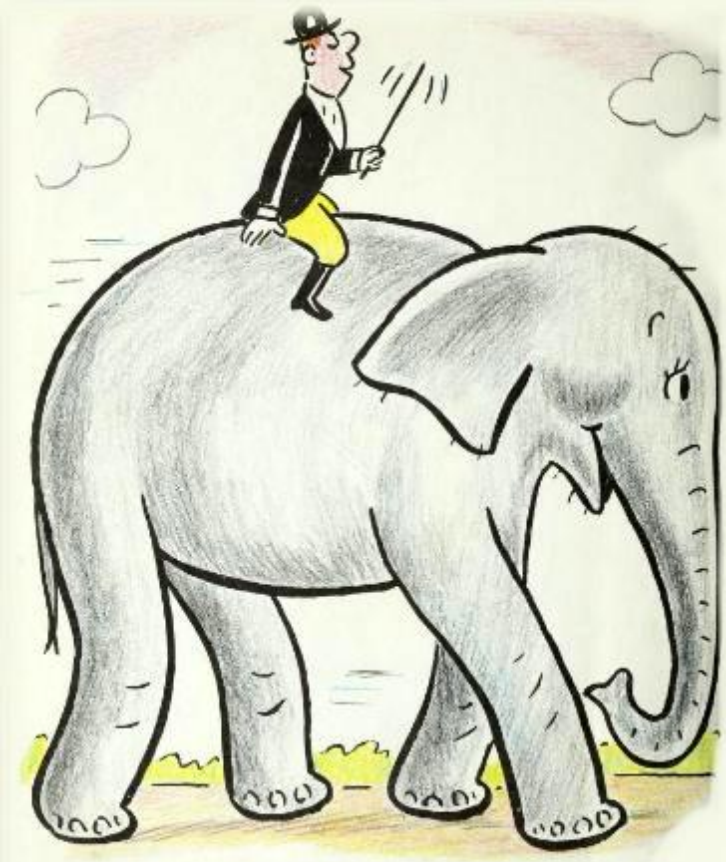

फिर वो आदमी ओलिवर की पीठ पर बैठा.

“गीदीयेप!” वो चिल्लाया.

उसकी आवाज़ सुनकर घोड़े बाड़ के ऊपर कूद गए.

पर ओलिवर से बाड़ के ऊपर नहीं कूदा गया.

“लगता है मैं घोड़ा नहीं हूँ,” उसने कहा.

“अलविदा.”

“अलविदा,” उस आदमी ने कहा.

फिर ओलिवर, बच्चों के प्ले-ग्राउंड के सामने से गुज़रा.

“क्या मैं तुम्हारे साथ खेल सकता हूँ?” उसने पूछा.

“तुम हमारे साथ झूल सकते हो,” बच्चों ने कहा.

“क्या इस तरह से झूलते हैं?” ओलिवर ने पूछा.
“नहीं, यह सही तरीका नहीं है,” बच्चों ने कहा.
“पर फिर भी चलेगा.”

“यह कैसे काम करता है?” ओलिवर ने पूछा.
“यह एक सी-सॉ है. हम लोग मिलकर दूसरी तरफ बैठेंगे,” बच्चों ने कहा.

“ठीक?” ओलिवर ने कहा.

फिर बच्चे स्लाइड की तरफ दौड़े.
वे एक-साथ स्लाइड पर नहीं चढ़ पाए.

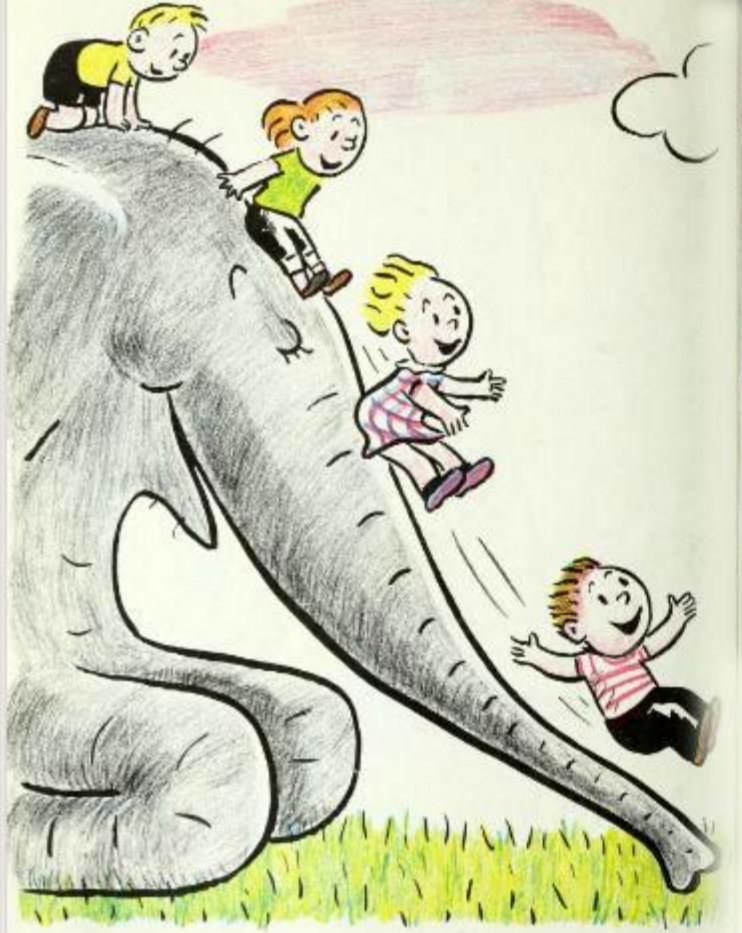

पर ओलिवर ने उनकी मदद की.

अब आराम का समय था.
बच्चे आपस में चर्चा करने लगे,
कि वे बड़े होकर क्या करेंगे.

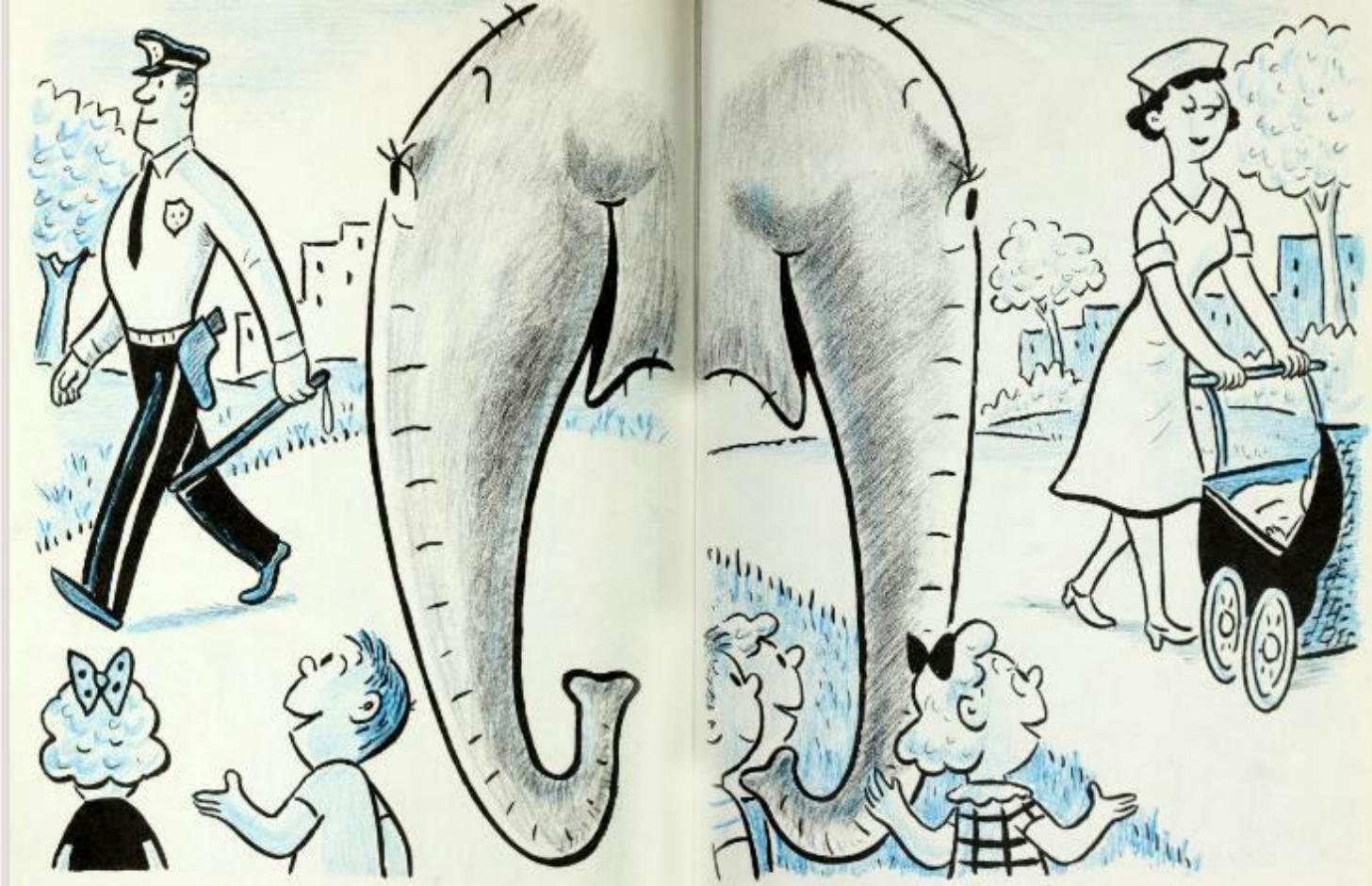

"मैं बड़ा होकर पुलिसमैन बनूँगा,"
टॉमी ने कहा.

"मैं नर्स बनूंगी," मैरी ने कहा.

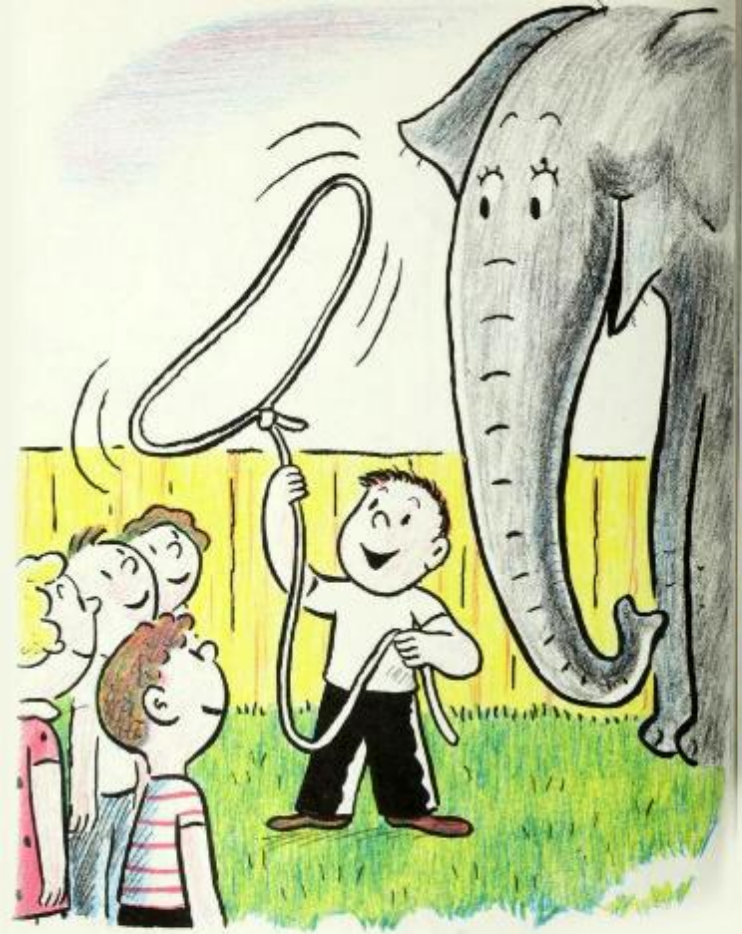

"मैं काऊबॉय बनूँगा," बेन ने कहा.

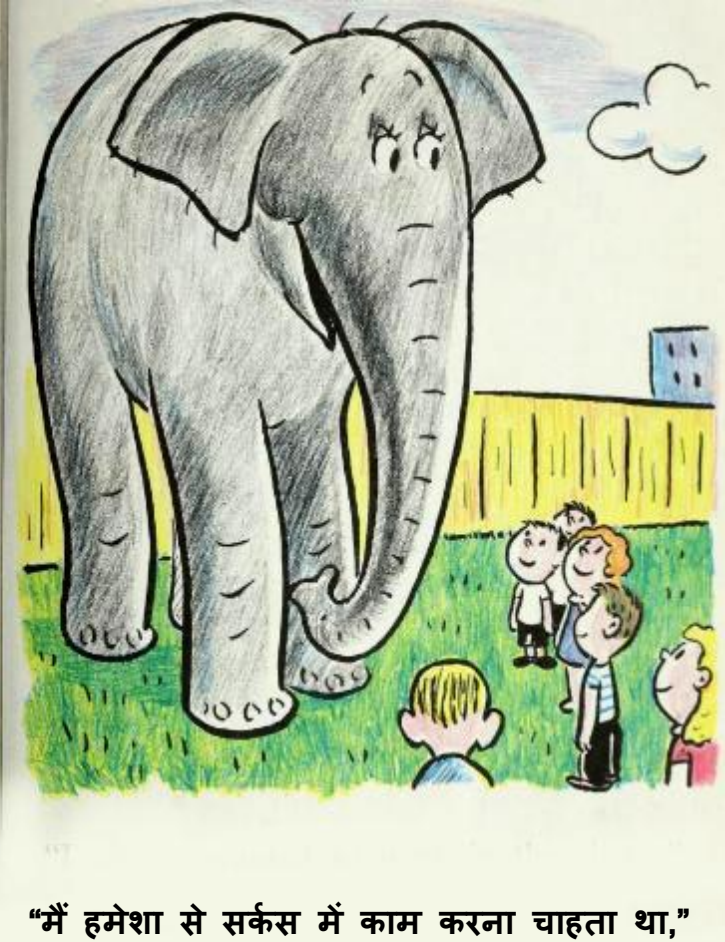

"मैं हमेशा से सर्कस में काम करना चाहता था," ओलिवर ने कहा.
"मैं वहां नाचने वाला हाथी बन सकता था."

फिर ओलिवर ने बच्चों के सामने
नाचना शुरू किया.

सब लोग रूककर ओलिवर का नाच देखने लगे.
उन्होंने सर्कस की परेड की ओर बिल्कुल नहीं देखा.
वे सिर्फ ओलिवर को देखते रहे.

उन्होंने कलाबाजों की तरफ नहीं देखा.

उन्होंने बाजीगरों की तरफ भी नहीं देखा.

उन्होंने मसखरों को भी नहीं देखा.

“क्या वे मेरी ओर देख रहे हैं?”

शेर के ट्रेनर ने पूछा.

“नहीं,” शेर ने जवाब दिया.

“वे सब उस हाथी को नाचते हुए देख रहे हैं.”

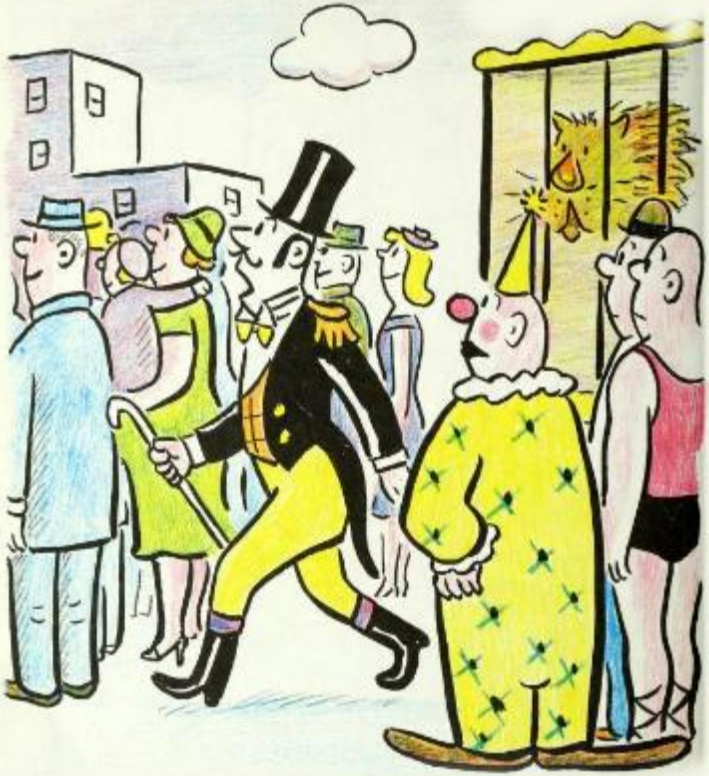

“यहाँ यह सब क्या हो रहा है?”
सर्कस के मालिक ने पूछा.
फिर वो माजरा देखने के लिए दौड़ा.

“ऐसा उम्दा हाथी का नाच,
मैंने पहले कभी नहीं देखा,”
सर्कस के मालिक ने कहा.

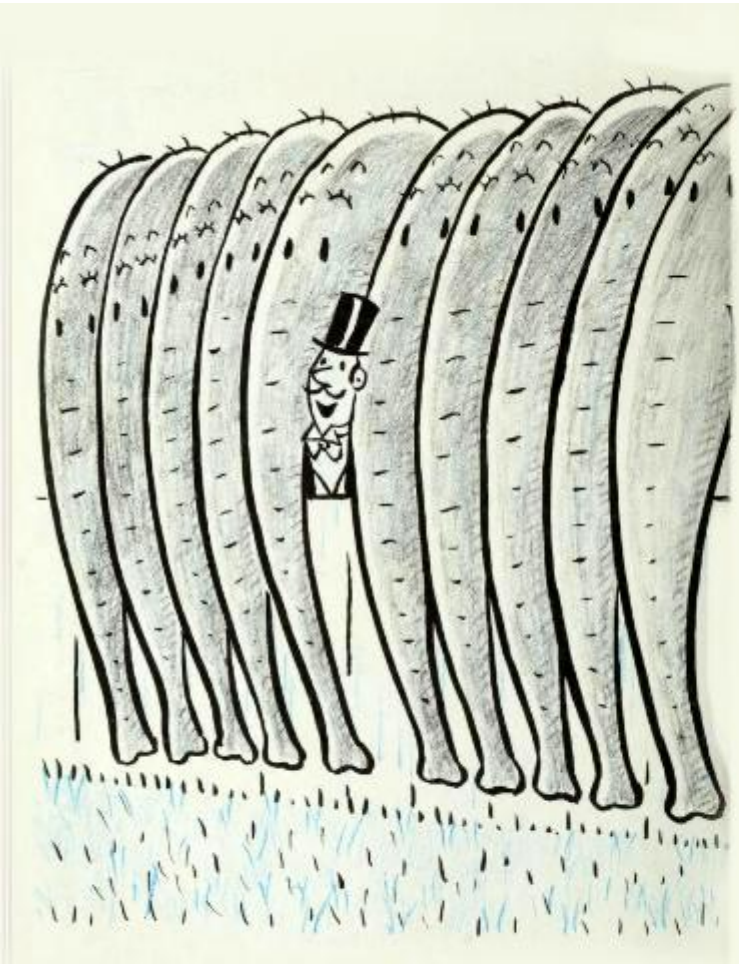

“यह तो अपना ओलिवर है!”
बाकी हाथी चिल्लाए.

“ओलिवर,” सर्कस के मालिक ने कहा,
“मुझसे बड़ी गलती हुई.
हमें तुम्हारी बहुत ज़रुरत है.
क्या तुम हमारे सर्कस में शामिल होगे?”

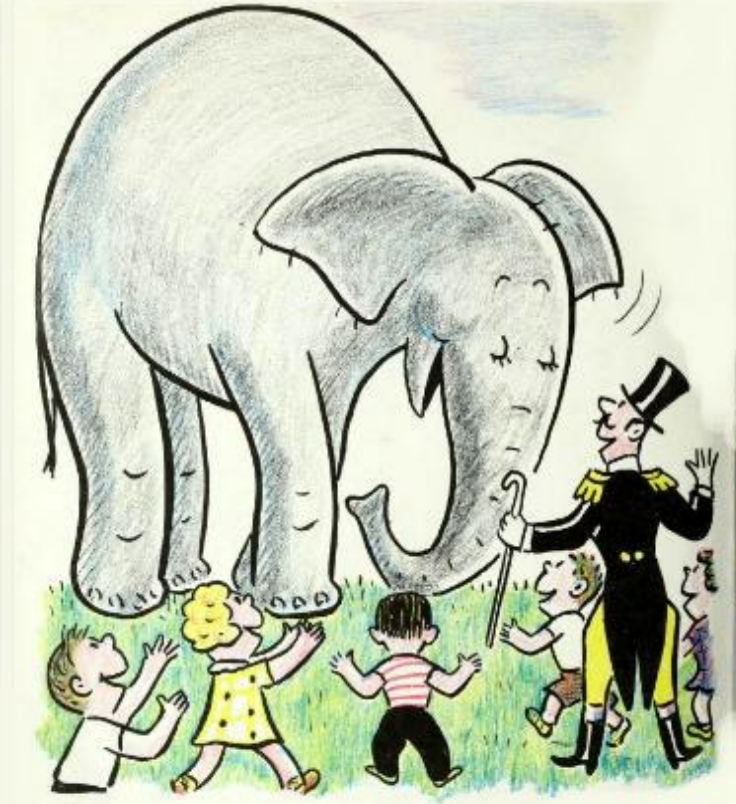

“मुझे बहुत ख़ुशी होगी,” ओलिवर ने कहा.
“हुर्रे!” बच्चे चिल्लाए.
“चलो तुम्हें अपनी पसंद का काम मिल गया.”

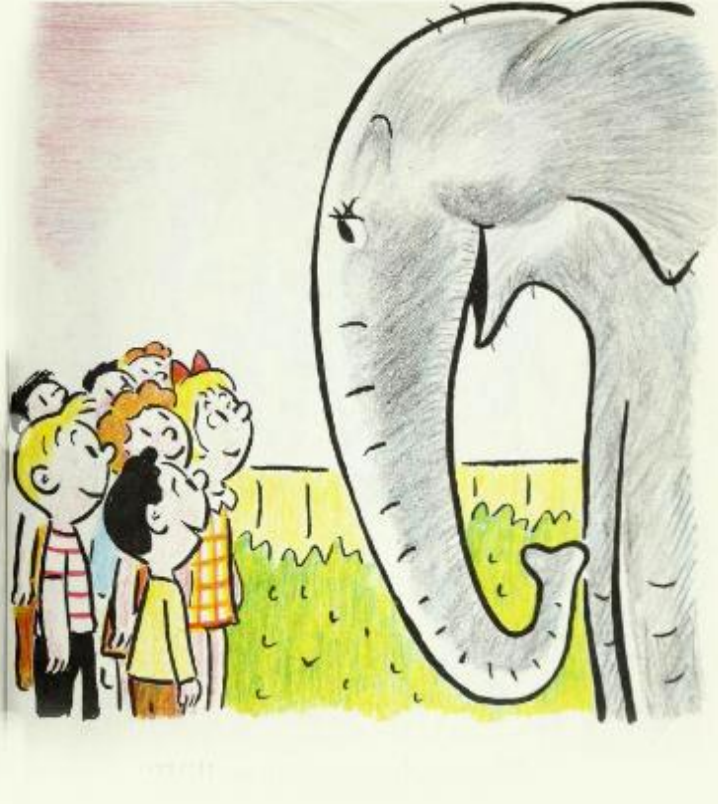

“क्या तुम हमें याद रखोगे?”
बच्चों ने पूछा.
“बिल्कुल,” ओलिवर ने जवाब दिया.
“हाथी कभी भूलते नहीं हैं.”

“और तुम्हारे साथ खेलकर मुझे जो ख़ुशी मिली
उसे तो कोई गेंडा भी कभी नहीं भूलेगा.”